



**COURSE :- BACHELOR OF LIBRARY AND INFORMATION SCIENCE
(BLIS)**

PAPER :- 3RD

TOPIC :- NOTATION

(अंकन)

उद्देश्य :- इस पाठ का उद्देश्य अंकन की परिभाषा, प्रकार, कार्य एवं अच्छे अंकन के गुणों को बताना है।

**PREPARED BY :- DINESH SINGH, CHIEF COORDINATOR,
LIBRARY SCIENCE, NOU**

अंकन (Notation)

1. भूमिका (Introduction)
2. परिभाषा (Definition)
3. आवश्यकता (Need)
4. कार्य (Functions)
5. प्रकार (Types)
6. उत्तम अंकन के गुण (Qualities of good Notation)
7. निष्कर्ष (Conclusion)

भूमिका (Introduction)

अंकन चिह्न या प्रतीक को कहा जाता है। इसका प्रयोग दैनिक जीवन में सुविधा के लिए किया जाता है। मनुष्य अपने विचारों को लेखन द्वारा व्यक्त करते समय कोमा (,) कोलन (:), सेमीकोलन (;) आदि का प्रयोग करता है। गणित विषय में जोड़, घटाव, गुणा भाग आदि के लिए क्रमशः + , - , ×, ÷ आदि चिह्नों का प्रयोग किया जाता है। इन्हें हम अंकन कह सकते हैं।

ग्रंथालय में पाठ्य-सामग्रियों का संग्रह (collection) एवं व्यवस्थापन (arrangement) पाठकों एवं कर्मचारियों की सुविधा के लिए किया जाता है। व्यवस्थापन में यांत्रिकता (mechanism) एवं सहायक अनुक्रम (helpful sequence) लाने हेतु ग्रंथ के विषय वस्तु (Thought content) को प्राकृतिक भाषा (natural language) से कृत्रिम (artificial) भाषा में अनुवाद कुछ क्रमसूचक (ordinal) अंक की सहायता से किया जाता है। अतः, जिन प्रतीकों अथवा चिह्नों की मदद से विषय के नाम को कृत्रिम भाषा में अनुवाद किया जाता है उन्हें अंकन कहा जाता है। विश्व के जिन प्रमुख वर्गीकरण पद्धतियों का निर्माण वर्गीकार्य (Classificationist) द्वारा किया गया है उन पद्धतियों का आधार अंकन है। अंकन के अभाव में ग्रंथों का वर्गीकरण असंभव है।

अतः ग्रंथालय वर्गीकरण के लिए अंकन अत्यंत आवश्यक है। ग्रंथों में विशिष्ट विषय का वर्णन प्राकृतिक भाषा में रहता है। वर्गीकरण हेतु उस प्राकृतिक भाषा को कृत्रिम भाषा में अनुवाद करना अनिवार्य है। उस कृत्रिम भाषा का निर्माण अंकन द्वारा ही किया जाता है।

उदाहरणार्थ :

ग्रंथ के विषय का नाम प्राकृतिक भाषा में	विषय के नाम का कोलन एवं डी डी सी पद्धति के अंकन के अनुसार कृत्रिम भाषा में अनुवाद	
	CC	DDC
ग्रंथालय विज्ञान (Library Science)	2	020
गणित (Mathematics)	B	510
भौतिकी (Physics)	C	530
अर्थशास्त्र (Economics)	X	330

यहाँ 2, B, C, X कोलन वर्गीकरण पद्धति में प्रयुक्त (Used) अंकन है। ये क्रमशः ग्रंथालय विज्ञान, गणित, भौतिकी एवं अर्थशास्त्र विषय का प्रतिनिधित्व करते हैं तथा 020, 510, 530 एवं 330 उपरोक्त विषय को DDC के अनुसार निरूपित करता है। अतः 2, B, C, X एवं 020, 510, 530, 330 कोलन एवं डी डी सी में प्रयुक्त अंकन हैं।

परिभाषा (Definition)

ग्रंथालय विज्ञान के विभिन्न विद्वानों ने अंकन को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है—

1. डॉ. रंगनाथन के अनुसार, "वर्गीकरण पद्धति में वर्गों का प्रतिनिधित्व करने के लिए प्रयुक्त क्रमिक अंकों की व्यवस्था को अंकन कहा जाता है।"

"A system of ordinal numbers used to represent the classes in a scheme of classification."

2. मन के अनुसार, "वर्गों और उनके उपविभागों के लिए निर्धारित चिह्नों को उस पद्धति का अंकन कहा जाता है।"

"The symbol which stands for classes and their sub-divisions is called the notation of that scheme."

3. सेयर्स के अनुसार, "अंकन वर्गीकरण में पदों के लिए निर्धारित चिह्नों की शृंखला अथवा सांकेतिक चिह्न है। - - - - - अंकन अपनी व्यवस्था द्वारा वर्गीकरण की व्यवस्था को प्रदर्शित करता है।"

"A notation is a series of symbols, or short hand signs for the terms in classification ... and which in their arrangement show the arrangement of classification."

4. फामर एवं वेल्स के अनुसार, "अंकन यांत्रिक व्यवस्था के लिए एक विधि है और इसका निर्माण निर्धारित क्रम में लिखित प्रतीकों द्वारा किया जाना चाहिए।"

"Notation is a device for mechanising arrangement and must be composed of written symbols whose order is defined."

5. फिलिप्स के अनुसार, "किसी वर्ग अथवा वर्ग के विभाजन या उपविभाजन के नामों के लिए निर्धारित प्रतीकों की शृंखला को अंकन कहते हैं जो किसी वर्गीकरण की व्यवस्था की ओर संकेत करने का सुगम साधन है।"

"A Notation is a series of symbols which stands for the names of a class or any division or sub-division of a class and forms a convenient means of reference to the arrangement of a classification."

उपरोक्त परिभाषाओं के आलोक में यह स्पष्ट होता है कि अंकन एक कृत्रिम भाषा है जिसपर वर्गीकरण पद्धति का संपूर्ण व्यावहारिक पक्ष आधारित है। इसका निर्माण वैज्ञानिक ढंग से विस्तारपूर्वक किया जाना चाहिए जिससे प्राकृतिक भाषा के मूल पदों का अनुवाद सफलतापूर्वक किया जा सके।

उक्त परिभाषाओं के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि अंकन एक प्रकार का प्रतीक व चिह्न है जो किसी वर्गीकरण पद्धति में विषयों का प्रतिनिधित्व करने हेतु प्रयोग किया जाता है। यह एक अधिमन्य कृत्रिम भाषा है, जिसका प्रयोग वर्गाचार्य द्वारा वर्गीकरण पद्धति के निर्माण में किया जाता है तथा उस पद्धति की सहायता से वर्गीकरण कर्ता ग्रंथालय में प्रलेखों के क्रामिक संख्या (Call number) का निर्माण करता है।

आवश्यकता (Need)

ग्रंथालय में संग्रहित पाठ्य-सामग्रियों का व्यवस्थापन वर्णानुक्रम (Alphabetical order) या वर्गानुक्रम (Classified order) में किया जा सकता है।

डॉ० रंगनाथन ने निम्नांकित कारणों से विषयों (Subjects) को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करना उचित नहीं माना है।

(i) वर्णानुक्रम की असमर्थता (Unhelpfulness of alphabetical sequence):

विषय के नाम को वर्णानुक्रम में व्यवस्थित करने पर ग्रंथालय में संबंधित विषय छिन्न-भिन्न (scattered) हो जाते हैं जिससे सहायक अनुक्रम की स्थापना नहीं हो पाती है। जैसे —

वर्णानुक्रम व्यवस्थापन (Alphabetical arrangement)	CC के अनुसार वर्गीकृत रूप में व्यवस्थापन (Classified arrangement according to CC.)	
अंकगणित (Arithmetic)	अंकगणित	B1
अर्थशास्त्र (Economics)	बीजगणित	B2
भौतिकी (Physics)	भौतिकी	C
भूगोल (Geography)	विद्युत	C6
मुद्रा (Money)	भूगोल	U
विद्युत (Electricity)	अर्थशास्त्र	X
बीजगणित (Algebra)	मुद्रा	X61

वर्णानुक्रम व्यवस्थापन में अंकगणित से बीजगणित तथा भौतिकी से विद्युत एवं अर्थशास्त्र से मुद्रा अलग हो गया है जबकि वर्गीकृत व्यवस्थापन में संबंधित विषय अलग बगल में आ गए हैं।

(ii) वर्णानुक्रम पर विषय के नाम में परिवर्तन का प्रभाव :

वर्णानुक्रम से ग्रंथों अथवा प्रलेखों को व्यवस्थित करने में जो दूसरी कठिनाई सामने आती है वह यह है कि समय के साथ कुछ विषयों के नामों में परिवर्तन हो जाता है। जैसे भौतिकी (Physics) को पहले प्राकृतिक दर्शन (Natural Philosophy) कहा जाता था। नाम के परिवर्तन होने से संबंधित विषय एक स्थान पर नहीं आ पायेंगे।

(iii) वर्णानुक्रम पर पर्यायवाची (Synonyms) शब्द का प्रभाव :

विषय का नाम एक से अधिक शब्दों में होने पर भी वर्णानुक्रम व्यवस्थित करने में कठिनाई उत्पन्न होती है। जैसे Great Britain और United Kingdom, Vitamin C और Cclin.

अतः वर्णानुक्रम से व्यवस्थित करने पर एक ही विषय विटामिन सी दो जगह व्यवस्थित हो जाएगा।

हिन्दी में कपड़ा शब्द के लिए वस्त्र, पट, वसन शब्दों का भी प्रयोग किया जाता है। अब इन्हें किस नाम से व्यवस्थित किया जाये यह एक बड़ी समस्या सामने आ जाती है।

(iv) वर्णानुक्रम पर श्रुतिसम भिन्नार्थक (Homonyms) शब्दों का प्रभाव :

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द भी विषयों को वर्णानुक्रम से व्यवस्थित करने में समस्या उत्पन्न कर देता है। प्राकृतिक भाषा में एक ही शब्द अनेक अर्थ में प्रयोग होता है।

हिन्दी में अक्षर शब्द का निम्नांकित अनेकों अर्थों में प्रयोग होता है — ब्रह्मा, विष्णु, अकारादि वर्ण, शिव, धर्म, मोक्ष, गंगन, सत्य, जल, तपस्या आदि तथा अंग्रेजी के order शब्द का निम्नांकित अर्थों में प्रयोग होता है—

(a) monastic brotherhood

(b) regular arrangement

(c) conformity of law

(d) action suited to particular end

भिन्नार्थक शब्द के वजह से असंबद्ध विषयों का व्यवस्थापन एक जगह हो जाएगा जो कि अवांक्षनीय है।

(v) भाषाओं की विविधता का वर्णानुक्रम पर प्रभाव :

विषयों का नाम भिन्न-भिन्न शब्द से शुरू होते हैं। इससे उनका व्यवस्थापन गड़बड़ा जाता है और पाठकों तथा ग्रंथालय कर्मियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जैसे Physics विषय को हिन्दी में भौतिक विज्ञान या भौतिकी तथा Chemistry को हिन्दी में रसायन विज्ञान कहते हैं।

वर्णानुक्रम व्यवस्थापन से उत्पन्न उपरोक्त समस्याओं से बचने के लिए प्रलेखों को वर्णानुक्रम (Classified order) में व्यवस्थित करने की आवश्यकता हुई। इसके लिए वर्गीकरण पद्धति का

निर्माण किया गया जिसमें प्रतीक अथवा चिह्नों का प्रयोग ग्रंथ के विषय वस्तु के लिए किया गया। उन प्रतीकों व चिह्नों की सहायता से ग्रंथ के विषय वस्तु को जो कि प्राकृतिक भाषा में व्यक्त रहती है उसे वर्गीकरण की कृत्रिम भाषा के द्वारा व्यक्त किया जाता है। यह भाषा वर्णानुक्रम के सभी दोषों से मुक्त होती है तथा इनका अनुक्रम (sequence) भी सुनिश्चित होता है। अतः, प्राकृतिक भाषा का एकमात्र विकल्प कृत्रिम भाषा में वर्णित ये चिह्न व प्रतीक हैं जिन्हें हम अंकन कहते हैं।

अंकन वर्गीकरण की सूचियों (schedules) के निर्माण हेतु आवश्यक है। इसके अभाव में वर्गीकरण के सैद्धांतिक पक्ष को व्यावहारिक रूप प्रदान करना तथा उसके उद्देश्यों की प्राप्ति असम्भव है।

अंकन का कार्य (Functions of Notation)

1. अंकन ग्रंथ में वर्णित विशिष्ट विषय के नाम को प्राकृतिक भाषा से कृत्रिम भाषा में परिवर्तित करने में सहायता प्रदान करता है।
2. यह विषयों को सहायक क्रम में व्यवस्थित करने में सहायक सिद्ध होता है।
3. वर्णानुक्रम विषय सूची (Alphabetical Subject Index) का निर्माण अंकन के आधार पर ही संभव है।
4. वर्गीकरण अनुसूची के पदानुक्रम (Hierarchy) में पदों (Terms) के क्रम और स्थान को निर्दिष्ट करने का एकमात्र साधन अंकन है।
5. बिना ग्रंथ को पढ़े ही उसके विशिष्ट विषय का ज्ञान अंकन की सहायता से प्राप्त होता है।
6. यह प्रलेखों को निधानी (Shelves) पर क्रमवत् व्यवस्थित करने में सहायक सिद्ध होता है तथा इसके प्रयोग से ग्रंथों के आदान-प्रदान करने का ब्यौरा रखने तथा अन्य सांख्यिकी संबंधी विवरण तैयार करने में सहायता मिलती है।
7. यह अधीनस्थ (Subordinate) और समकक्ष (Co-ordinate) वर्गों के क्रम को निश्चित करने में सहायता प्रदान करता है।
8. इससे संदर्भ ग्रंथ सूचियों (Bibliographies) में प्रविष्टियों (entries) को व्यवस्थित करने में मदद मिलती है।
9. एक संक्षिप्त चिह्न के रूप में यह प्रलेखों के विभिन्न भागों में लिखा जाता है जिससे ग्रंथों के आदान-प्रदान एवं पुनः व्यवस्थित करने में सुविधा होती है।
10. इससे ग्रंथालय को प्रदर्शित करने में सहायता मिलती है।
11. ग्रंथालय सूची की सफलता अंकन पर निर्भर करती है।
12. वर्गीकरण पद्धति में अंकन द्वारा स्मृति सहायक (mnemonic) का प्रयोग सुविधापूर्वक किया जाता है।

हेनरी ई० बिलस (Bliss, Henry E) के अनुसार "अंकन का कार्य जो कुछ भी हो लेकिन वर्गीकरण का निर्माण इसके द्वारा नहीं होता है; यद्यपि यह सम्पूर्ण वर्गीकरण पद्धति को नष्ट कर सकता है।"

अतः अंकन का मुख्य कार्य वर्गों तथा उनके उपविभाजनों तथा एकलों को निर्दिष्ट करना है।

अंकन के प्रकार (Kind of Notation)

अंकन का निर्माण प्रतीकों (Symbols), चिह्नों (Signs), अक्षरों आदि का प्रयोग करके किया जा सकता है।

अंकन दो प्रकार के होते हैं :

i. शुद्ध अंकन (Pure Notation)

ii. मिश्रित अंकन (Mixed Notation)

i. शुद्ध अंकन —

एक ही प्रकार के प्रतीकों व चिह्नों से निर्मित अंकन शुद्ध अंकन कहलाता है।

जैसे — 1 2 3 4 5 6 7 8 9 या

A B C D E F X Y Z.

सर्वप्रथम दशमलव वर्गीकरण पद्धति (DC) में 0 से 9 तक के अंकों का प्रयोग कर शुद्ध अंकन का निर्माण किया गया था। अब इस पद्धति में भी रोमन अक्षर के प्रयोग का भी प्रावधान किया गया है।

सेयर्स (Saycers, WCB) महोदय ने शुद्ध अंकन का उप सूत्र निर्धारित किया; परन्तु उन्होंने शीघ्र अनुभव किया कि शुद्ध अंकन की एक सीमा है जो शुद्धता के आधार पर सफल नहीं हो सकता है।

शुद्ध अंकन के गुण

(i) शुद्ध अंकन के चिह्नों (Signs) को लिखना, पढ़ना और स्मरण रखना आसान है, क्योंकि इसमें एक तरह के चिह्नों या प्रतीकों का प्रयोग किया जाता है।

(ii) शुद्ध अंकन के द्वारा निर्मित वर्ग का क्रम निश्चित करना सरल है। इसके प्रयोग के लिए ग्रंथालय कर्मचारियों को विशेष प्रशिक्षण की जरूरत नहीं है।

(iii) इसका प्रयोग आसान होने से पाठक एवं कर्मचारी के समय की बचत होती है।

(iv) इस अंकन को लिखने या टाइप करने में अशुद्धि की सम्भावना कम रहती है।

शुद्ध अंकन के दोष —

(i) शुद्ध अंकन के आधार का संकुचित होना, इसका सबसे बड़ा दोष माना जाता है।

(ii) शुद्ध अंकन पर आधारित वर्गीकरण पद्धति में विधियों का प्रावधान नहीं होने के वजह से ज्ञान जगत् में उत्पन्न नए विषयों का उचित स्थान देने में कठिनाई होती है।

(iii) इसके द्वारा सूक्ष्म वर्गीकरण (Depth Classification) संभव नहीं है।

ii. मिश्रित अंकन —

एक से अधिक चिह्नों व प्रतीकों के प्रयोग से निर्मित अंकन को मिश्रित अंकन कहा जाता है।

जैसे — 1234567890

तथा

A B C D X Y Z

एवं

, ; : — abcd — z आदि

डॉ० रंगनाथन ने कोलन वर्गीकरण पद्धति में मिश्रित अंकन का प्रयोग किया है। ब्राउन का विषय वर्गीकरण (Subject Classification) भी मिश्रित अंकन से निर्मित है। रिचर्डसन ने मिश्रित अंकन को अधिक महत्त्व दिया है। उनका कहना है कि किसी न किसी रूप में किसी न किसी समय मिश्रित अंकन का प्रयोग प्रत्येक वर्गीकरण पद्धति को करना पड़ेगा। आज उनकी बातें सत्य साबित हो रही हैं; क्योंकि विश्व का प्रथम शुद्ध अंकन पर आधारित ड्युई महोदय का दशमलव वर्गीकरण पद्धति में भी साहित्य के वर्गीकरण में रोमन अक्षर का प्रयोग के निर्देश दिया गया है।

अतः दशमलव पद्धति (DC) भी मिश्रित अंकन की ओर बढ़ रही है।

मिश्रित अंकन के गुण (Merits of Mixed Notation)

(i) इस अंकन का आधार (Qualities of Mixed Notation)

इस अंकन का आधार विस्तृत होता है। अतः, ज्ञान जगत् के प्रथम स्तर के वर्गों को अलग-अलग अंक प्रदान करना संभव हो पाता है।

(ii) इसके प्रयोग से वर्गांक का आधार छोटा रहता है।

(iii) विधियों के प्रावधान के कारण मिश्रित अंकन वाली वर्गीकरण पद्धति में ज्ञान वर्गीकरण के स्तर पर पंक्ति (array) एवं शृंखला (chain) में असीमित ग्राह्यता (hospitality) आ जाती है जिससे नवीन वर्गांक का उचित स्थान प्रदान करना आसान हो जाता है।

मिश्रित अंकन के दोष (Demerits of Mixed Notation)

(i) विभिन्न प्रकार के प्रतीकों (symbols) एवं चिह्नों के प्रयोग से निर्मित होने के कारण इसे लिखना, उच्चारण करना तथा याद रखना शुद्ध अंकन की अपेक्षा कठिन होता है।

(ii) अनेक प्रतीकों से निर्मित होने की वजह से इसमें त्रुटियों की सम्भावनाएँ अधिक रहती है।

(iii) इससे निर्मित वर्गांक जटिल (complex) होता है। इसके क्रमसूचक मूल्य (ordinal value) समझकर निधानी (shelf) पर से ग्रंथों को निकालना और पुनः व्यवस्थित करना एक कठिन कार्य है।

(iv) इस अंकन से निर्मित वर्गीकरण पद्धति का प्रयोग प्रशिक्षित कर्मचारी द्वारा ही सम्भव है।

उत्तम अंकन के गुण (Qualities of Good Notation)

वर्गीकरण पद्धति में अंकन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। विल्स (H.E. Bliss) का कथन सत्य साबित हुआ है कि "अंकन से वर्गीकरण पद्धति का निर्माण नहीं होता, यद्यपि यह सम्पूर्ण

पद्धति को नष्ट कर सकता है" The notation does not make a classification, though it may mar it"

उत्तम अंकन किसे कहा जाएगा तथा इसमें कौन-कौन गुण होना चाहिए इस विषय में ग्रंथालय विज्ञान के विद्वान एकमत नहीं हैं। सेयर्स महोदय ने संक्षिप्तता, सरलता एवं ग्राह्यता को अंकन का आवश्यक गुण माना है तो रंगनाथन ने इन गुणों के साथ-साथ सापेक्षिकता, स्मरणशीलता तथा संश्लेषणात्मकता के गुणों को भी आवश्यक समझा है।

फिलिप्स (H.W. Phillips) के अनुसार उत्तम अंकन को अनुसूची का पूरक होना चाहिए। इसे ऐसे चिह्नों से निर्मित होना चाहिए जो प्रचलित हो, और जो संक्षिप्त, बर्द्धनशील एवं स्मृति सहायक हों।"

किसी वर्गीकरण पद्धति के उत्तम अंकन में निम्नांकित विशेषताओं का रहना आवश्यक समझा जाता है।

अंकन के गुण (Qualities of Notation)

अच्छे एवं खराब अंकन के बीच तुलना करते समय ही अंकन के गुणों का प्रश्न सामने आता है और इसका अर्थ होता है वे विशेषताएँ जिनसे उत्तम वर्गीकरण पद्धति का निर्माण होता है। इससे हम इन निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि एक उत्तम वर्गीकरण पद्धति वही है, जिसमें प्रत्येक ग्रंथ को पृथक व्यक्तित्व प्रदान करना संभव हो। यह तभी हो सकता है जब अंकन इतना संग्राहक हो कि ज्ञान की प्रत्येक शाखाओं एवं उपशाखाओं को समान पद प्रदान कर सके।

सेयर्स महोदय के अनुसार, अच्छे अंकन के निम्नांकित गुण हैं :

1. संक्षिप्तता (Brevity)
2. सरलता (Simplicity)
3. नम्यता अथवा लचीलापन (Flexibility)
4. स्मरणशीलता (Mnemonics)

1. संक्षिप्तता – संक्षिप्तता का अर्थ है कि जिन अंकों के द्वारा विशिष्ट विषय को अभिव्यक्त किया जाता है उसे संक्षिप्त होना चाहिए।

उदाहरणार्थ – मुख्य विषयों को CC एवं DDC में निम्न तरह से अंकन के प्रयोग द्वारा अभिव्यक्त किया गया है।

Main Class	CC	DDC
Economics	X	330
Library Science	2	020
University Library	234	027.7

उपरोक्त उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि CC में संक्षिप्तता का गुण DDC से अधिक है।

संक्षिप्तता क्रम एवं अभिव्यक्ति को ध्यान में रखकर निश्चित किया जाना चाहिए।

2. सरलता - अंकन जितना संभव हो सके सरल होना चाहिए।

(i) यह लिखने में सरल होना चाहिए।

(ii) यह याद रखने में सरल होना चाहिए।

(iii) यह बोलने में सरल होना चाहिए।

(iv) इसका अत्यधिक सामान्य रूप से प्रयोग होना चाहिए।

प्रत्येक चिह्न अथवा प्रतीक जो अंकन पद्धति हेतु प्रयुक्त होते हैं उन्हें स्पष्टतः दूसरे चिह्न अथवा प्रतीक से अभिज्ञेय (identifiable) होना चाहिए। अगर कोई रोमन अक्षर I एवं अंक 1 का प्रयोग करता है तो इससे भ्रम पैदा होता है।

3. नम्यता एवं लचीलापन - अंकन में नम्यता का गुण सबसे प्रमुख गुण माना जाता है। वर्गीकरण पद्धति को अद्यतन (uptodate) बनाये रखने में यह गुण अत्यंत सहायक सिद्ध होता है। ज्ञान जगत् में नवीन विषय का आविर्भाव होता रहता है। नवीन विषय को उचित स्थान अगर वर्गीकरण पद्धति में नहीं मिलेगा तो वह पद्धति अतिशीघ्र महत्वहीन हो जाएगी।

नम्यता (flexibility), विस्तारशीलता (expensibility), ग्राह्यता (hospitality) एवं समायोजन (adjustability) का प्रयोग एक ही अर्थ एवं उद्देश्य से किया जाता है। इसी गुण के कारण आधुनिक वर्गीकरण पद्धति प्राचीन पद्धतियों से भिन्न है और इसी पर पद्धति का विकास भी आधारित है। रंगनाथन ने CC में अनेक विधियों (devices) का प्रयोग कर अंकन में ग्राह्यता का विस्तार किया है।

4. स्मरणशीलता - आधुनिक वर्गीकरण पद्धति का एक स्वाभाविक एवं महत्वपूर्ण गुण उसकी स्मरणशीलता है। यह गुण सारणी (table) तथा अनुक्रमणी (index) को बार-बार देखने के कार्य को बिल्कुल कम करने की क्षमता रखता है।

डॉ. रंगनाथन ने अंकन के निम्नांकित गुण निर्धारित किए हैं -

1. इसकी पंक्ति एवं शृंखला में नवीन विषयों की ग्राह्यता होनी चाहिए।
2. इसमें संश्लेषण संभव होना चाहिए।
3. इसकी अभिव्यंजकता (expressiveness) बनी रहनी चाहिए।
4. इसकी लंबाई प्रतिनिधित्व वर्ग की व्यापकता के सापेक्षिक होनी चाहिए।
5. इसे अपने आकार में स्मरणशील (mnemonic) होना चाहिए।

इस प्रकार अंकन का सबसे महत्वपूर्ण गुण नम्यता (flexibility) एवं स्मरणशीलता (mnemonic) माने जाते हैं। कोई भी वर्गीकरण पद्धति अंकन के इन दोनों गुणों के अभाव में ज्यादा दिन तक जिन्दा नहीं रह सकती है।

निष्कर्ष (Conclusion)

उत्तम अंकन उसे कहा जाना चाहिए जो वर्गीकरण पद्धति को उत्तम बनाने में समर्थ हो। एक उत्तम वर्गीकरण वह है जिसके द्वारा प्रत्येक ग्रंथ को स्वतंत्र व्यक्तित्व प्रदान किया जा सके। यह तभी सम्भव है जब अंकन में इतनी क्षमता हो कि वह ज्ञान जगत् के प्रत्येक विशेषता को समान रूप से अभिव्यक्त कर सके। अंकन की सफलता एवं संक्षिप्तता को कभी भी उसकी अभिव्यञ्जकता (expressiveness) पर हावी नहीं होना चाहिए। अंत में यह कहना अनुचित नहीं होगा कि उत्तम अंकन के अभाव में वर्गीकरण प्रक्रिया को गति प्रदान करना असंभव है।